PARIVARTAN परिवर्तन

हमार अँगना

TAKSHILA तक्षशिला

अंक 11 | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | अक्टूबर 2021-मार्च 2022

परिवर्तन बालघर आँगन द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका हमार अँगना के अंक 11 में आपका स्वागत है ।

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,

बालघर आँगन, परिवर्तन की शिक्षा इकाई की उप इकाई है जो पिछले 8 वर्षों से लगातार आंगनबाड़ी केंद्र के 3-6 वर्ष उम्र के बच्चों एवं 46 सेविकाओं के साथ जुड़कर काम कर रही है । बालघर आँगन का उद्देश्य,बच्चों को खेल,कविता,कहानी के माध्यम से शारीरिक,मानसिक एवं भाषा का ज्ञान करवाना और कार्यक्षेत्र के आंगनबाड़ी केन्द्रों को सुदृढ़ करने हेतु सभी सेविकाओं का मार्गदर्शन करना है ।

पिछले लगभग दो सालों से वैश्विक महामारी- कोरोना के चलते विभिन्न शिक्षण संस्थानों के बंद हो जाने से बालघर आँगन के कार्यक्रम प्रभावित हुए लेकिन फिर भी कोरोना सुरक्षा अधिनियम का ध्यान रखते हुए समुदाय में जाकर बच्चों को खेल-खेल में नयी-नयी जानकारी से रूबरू करवाने का प्रयास किया गया । साथ ही साथ केंद्र खुल जाने के बाद बच्चों का जुड़ाव पुनः आंगनबाड़ी से पहले की तरह हो सके,इस दिशा में उचित कदम उठाये गए । पत्रिका के इस अंक में हम पिछले वर्ष की गतिविधियों की एक छोटी सी झलक पेश कर रहे हैं, साथ ही साथ पोषाहार के लिए आंगनबाड़ी केंद्र पर चलाये गए कार्यक्रम गोदभराई रस्म में परिवर्तन का हस्तक्षेप किस प्रकार रहा एवं उसके क्या प्रभाव रहे, उस नई पहल को आप सभी के साथ साझा कर रहे हैं ।

सप्रेम

मधुबाला

संचालक, बालघर आँगन

हमारी कार्य प्रणाली

परिवर्तन के अंतर्गत बालघर आसपास के कुल 21 गाँवों के 46 आंगनबाड़ी केंद्रों के साथ कार्यरत है| हमारा काम 3-6 वर्ष के आयु वर्ग के के बच्चों के अंदर मानसिक,शारीरिक तथा बौद्धिक विकास को प्रबल करना है । मानव जीवन में यह उम्र ही ऐसी उम्र होती है जिसे गीली मिट्टी कहा जाता है अर्थात यह एक ऐसी आयु सीमा है जिसमें बच्चों का सर्वाधिक बौद्धिक विकास होता है । हम भी इसी बात का ध्यान रखते हुए, बच्चों के विकास के लिए खेल-खेल के माध्यम से उन्हें भविष्य के सफल नागरिक बनाने हेतु तैयार करते है ताकि ये बच्चे यहाँ से जाकर अपने केंद्र पर सबके लिए आदर्श बन उभरें और अन्य बच्चों को प्रेरित कर सकें ।

क्लास के लिए हमारे पास 6 माह की एक कार्य योजना है| इस कार्य योजना को बनाने के लिए अच्छों केंद्र, प्रथम,प्रार्थना, किताब अश्त्थ तथा दिल्ली पब्लिक स्कूल पटना की शिक्षिकाओं एवं परिवर्तन के साथियों को हम धन्यवाद देना चाहते हैं जिनके सहयोग के बिना यह कार्ययोजना सफल नहीं हो पाती ।

हमारी कार्ययोजना में मुख्य रूप से तरह-तरह की आवाज़ों से, अक्षर (फोनेटिक साउंड) की पहचान, अपने परिवार की जानकारी, देशभक्ति कविता,मन पसंद के खाने, तरह-तरह के पोषक तत्व आदि की जानकारी को शामिल किया गया है ताकि बच्चे इन आवश्यक बातों को खेल के माध्यम से समझ पायें ।

आंगनबाड़ी केन्द्रों पर बच्चों के प्रति सहायिका के दायित्व बोध हेतु आयोजित सहायिका प्रशिक्षण

बालघर आँगन बच्चों के साथ-साथ आंगनबाड़ी केंद्रों, समुदाय की गर्भवती महिलाओं एवं धात्री महिलओं के लिए कार्य करता है । यह आंगनबाड़ी को सुद्धिढ़ बनाने हेतु आंगनबाड़ी सेविकाओं को प्रशिक्षित भी करता है। इस वर्ष 2021-22 में सेविकाओं के साथ एक बार एवं सहायिकाओं के साथ दो बार प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें गतिविधियों के माध्यम से सहायिकाओं ने अपने कार्यस्थल पर की साफ- सफाई के महत्त्व को समझा, बच्चों के लिए पोषण संबंधी जिम्मेदारियों में वे अपनी भूमिका का निर्वहन किस प्रकार करती हैं इसपर विचार किया और अपने केंद्र पर वे क्या-क्या करती हैं जिससे पोषण की जागरूकता बढ़ती है- जैसी बातें साझा कीं । सेविका की अनुपस्थिति में केंद्र पर पठन-पाठन में सहायिकाओं की भूमिका को हम किस प्रकार और अधिक मजबूत बना सकते हैं , जिससे पठन -पाठन में भी वे सहायक की भूमिका में अपने आप को सक्रिय रूप से शामिल कर सकें इसपर विमर्श हुआ। सभी को सड़क के नियम एवं रोड मैप की जानकारी से अवगत कराया गया ताकि जब वे बच्चों को लेकर आंगनबाड़ी आ रही हों तो रास्ते में पड़ने वाले अस्पताल, विद्यालय, दाहिने-बांये मोड़ इत्यादि चिन्हों को पहचान सकें और बच्चों को भी अवगत कराते चलें ।

उपरोक्त उपयोगी बिन्दुओं को स्पष्टता से इस सहायिका प्रशिक्षण कार्यशाला में, सहायिकाओं द्वारा ही कराया गया। जिससे सहायिकायें अपने केंद्र पर बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को अच्छे से समझ सकें एवं केंद्र पर उनका प्रयोग कर सकें। इस प्रशिक्षण में कार्यक्षेत्र के 30 आंगनबाड़ी केंद्रों की 30 सहायिकाओं ने भाग लिया।

प्रभाव –

- आंगनबाड़ी केंद्र पर पोषणाहार के समय साफ़-सफाई एवं व्यंजन तालिका (मेन्यू) के अनुसार भोजन निर्माण में स्वच्छता एवं पौष्टिकता का ख्याल रखा जाने लगा है।
- बच्चों को घर से आंगनबाड़ी केंद्र लाने एवं पहुंचाते समय सड़क पर सावधानी बरतना शुरू हो गया है।
- बच्चों की साफ़-सफाई एवं कपड़े के लिए सहायिकायें अभिभावक से बात कर सफाई का महत्त्व समझा पा रही हैं।
- सेविका की अनुपस्थिति में बच्चों के साथ पठन-पाठन में भी वे सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

सोहर की ध्वनि के साथ गोदभराई दिवस का आयोजन

यह कार्यक्रम प्रत्येक माह की सात तारीख को आंगनबाड़ी केन्द्रों पर मनाया जाता है। गभर्वती महिला के लिए सात से आठ माह के अंदर यह उत्सव मनाया जाता है। गोदभराई दिवस मनाने को लेकर विभाग का उद्देश्य महिलाओं में पोषण को लेकर जागरूकता बढ़ाना है।बालघर आंगन अपने कार्यक्षेत्र के 46 आंगनबाड़ी केन्द्रों के साथ कार्य करता है। अपने आसपास के सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचे, इसके लिए यह गाँव वालों को जागरूक करता है और सेविकाओं को प्रेरित करता है कि जरुरतमंदों की सुविधाओं को वे उन तक पहुंचाएं।

ऐसे तो सरकार की बहुत सारी योजनाएं हैं लेकिन उनमें से एक बहुत ही महत्वपूर्ण योजना है गोदभराई और अन्नप्राशन जिसका उद्देश्य बच्चों और गर्भवती महिलाओं को संतुलित आहार उपलब्ध कराना तथा इस अवस्था में किन सावधनियां को बरतना है इसकी जानकारी पहुँचाना है। इन्हीं सब बातों की जानकारी को एक उत्सव

के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है और इसी उद्देश्य से ही आंगनबाड़ी केंद्र पर गोदभराई की शुरुआत की गई जो इससे पहले तक कागज पर ही सीमित थी । आस–पास के किसी भी गाँव में गोदभराई जैसी रस्म नहीं होती थी ।

यह बात बहुत पुरानी नहीं है जब एक दिन मैं पास ही के केंद्र संथू गई हुई थी । उस दिन वहाँ गोदभराई की रस्म मनायी जा रही थी। वहाँ पहुचकर यह कार्यक्रम देखने के बाद मैं बहुत निराश हो गई क्योंकि वहाँ मुश्किल से 3-4 महिलाओं की ही उपस्थिति थी । उसमें एक गर्भवती महिला और उनकी सास थी । यह देख मेरे मन में विचार आया कि इतनी अच्छी रस्म को लोग हल्के में ले रहे हैं इसे तो अच्छे तरीके से जन–जन तक पहुँचाना बहुत जरूरी है । यह बात मैंने अपने मन में ठान ली कि मैं इस दिशा में कोशिश करूंगी । हमारा क्या योगदान हो सकता है जिससे मैं एक उत्प्रेरक के रूप में इस रस्म के महत्त्व को सभी तक पहुँचा सकूँ, यह भी मेरा दायित्व है। मैंने आशुतोष जी-(जो परिवर्तन में रंगमंडली के कार्य को देखते हैं) से बातचीत की । आशुतोष जी हँसते हुए बोले "मधुबाला जी आप इस दिवस के लिए रंगमंडली से चार लोगों का सहयोग ले सकती हैं जो केंद्र पर गीत-संगीत, सोहर इत्यादि से वहाँ के माहौल को खुशनुमा बनाने में सहयोग करेंगे और अपनी शिक्षा टीम से राजवर्द्धन जी को ले लीजिये जो वहाँ केंद्र पर थोड़ा बहुत साज-सज्जा कर देंगे एवं पोस्टर बना देंगे । इन दोनों के सहयोग से यह कार्यक्रम बहुत प्रभावी दिखेगा और आपके कार्यक्रम में चार-चाँद लग जायेगा ।" उनके बताये हुए परामर्श के अनुसार ही मैंने अपना अगला प्लान बनाया । प्लान के अनुसार हमलोगों ने अगली 7 तारीख को जीरादेई प्रखंड के बंथू श्रीराम गाँव के केंद्र पर गोदभराई रस्म में हिस्सा लिया । राज सर ने पोस्टर, रंगोली तथा कागज का झालर बनाकर केंद्र को सजाया। रंगमंडली से प्रतिमा, अंशु, विवेक और रोजाद्दीन ने सोहर गाकर वहाँ का माहौल, उत्सव जैसा बना दिया । धीरे-धीरे एक दो कर के वहाँ महिलाओं तथा कुछ पुरुषों का जमावड़ा होने लगा । फिर मैंने इस उत्सव का महत्त्व एवं इससे जुड़ी आवश्यक बातों को

सभी के साथ साझा किया । कार्यक्रम बहुत सफल रहा। समुदाय के लोगों को कार्यक्रम बहुत अच्छा लगा एवं इसी तरह हर माह यह रस्म मनाने की बात वे सेविका से करने लगे ।

अगले माह यह कार्यक्रम आंदर प्रखंड के बंगरा उज्जैन गाँव में किया गया । इस बार भी हमारी तैयारी पहले जैसी ही कह लें या उससे भी ज्यादा थी । कार्यक्रम ख़त्म होने के उपरान्त हमने इस कार्यक्रम का फोटो एवं वीडियो उस प्रखंड के CDPO मैडम के पास भेज दिया । वीडियो देखने के बाद तुरंत CDPO मैडम का मेरे पास फोन आया वह इस कार्यक्रम के लिए मुझे तथा मेरी परिवर्तन टीम को बहुत बहुत धन्यवाद देने लगीं ।

अब यह गोदभराई रस्म आंगनबाड़ी केंद्र पर कागज से बाहर आकर यथार्थ बन गई है । एक समय था जब यह रस्म चुपके-चुपके हो जाती थी। अब यही रस्म इस माह किस केंद्र पर मनानी है इसकी सूचि पहले से ही मिलने लगती है तथा सेविका फोन कर अपने केंद्र पर यह रस्म हमलोगों के सहयोग से मनाने की आस रखती है । इस दिवस के दिन सेविका पहले से ही केंद्र पर बहुत तैयारी करती है, पूरे समुदाय में इसकी सूचना देती है जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग इस रस्म में शामिल हो सकें तथा गर्भवती महिला की गोदभराई के लिए आवश्यक फल, सब्जी एवं श्रृंगार के सामान को उपलब्ध कराने का प्रयास भी हो ।

परिवर्तन में सेविकाओं के लिए आयोजित किया गया सेविका प्रशिक्षण

दिनांक 11 और 12 फरवरी 20 22 को परिवर्तन परिसर में सेविका प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया । DPS पटना से रीमा सिंह और वंदना वर्मा द्वारा सिवान जिले के जीरादेई और आंदर प्रखंड की 10 पंचायतों से आने वाली 85 सेविकाओं को प्रशिक्षित किया गया। इसके फलस्वरूप सेविकाएं अपने केंद्र को और प्रभावी बनाने का प्रयास कर रही हैं ।

इस कार्यशाला का उद्देश्य, सेविका, सहायिका को नवाचार से सम्बद्ध नई-नई गतिविधियां करवाना, समय तालिका का निर्माण का तरीका बतलाना तथा शिक्षा संबंधी नवीन तकनीकों से अवगत कराना है। जिसके बाद केंद्र अपने बच्चों को और बेहतर ढंग से शिक्षा का लाभ दे पाए तथा आंगनबाड़ी केंद्र और सुदृड बने ।

गतिविधि

सेविका प्रशिक्षण के पहले दिन सभी सेविकाओं के साथ परिचय से शुरुआत हुई फिर (विशेषज्ञ) द्वारा "**तुम्ही हो माता –पिता तुम्ही हो**" प्रार्थना का अभ्यास करवाया गया। इसके बाद वंदना वर्मा द्वारा क्लास की शुरूआत हुई। सबसे पहले व्यायाम कराया गया जिसमें दिशा का निर्देश दिया गया। इसके साथ ही साथ बहुत ही सुन्दर कहानी सुनायी गई जिसका नाम था "**बेबी हिप्पो**"। इस कहानी में एक गेंडा के परिवार की कहानी को रोचकता के साथ बच्चों के सामने कैसे प्रस्तुत किया जाये यह बताया गया। कहानी के बाद एक कविता का वाचन "**जंगल में जानवर खेलते हैं**" कराया गया। इस कविता से बच्चों को जंगल के विभिन्न जानवरों को कैसे पहचाना जाये, यह बताया गया। आगामी त्योहार को देखते हुए '**होली आई**' कविता रीमा सिंह ने भाव समेत पढ़ कर सुनाई। आंगनवाड़ी केंद्र पर मनाए जाने वाले गोदभराई एवं अन्नप्राशन दिवस से जुड़े **सोहर, पोषण हो सुपोषण,** ले **संकल्प पोषण** जैसे गीतों की प्रस्तुति रंगमडली के साथीयों अंशु और प्रतिमा के सहयोग से की गयी। गीतों की प्रस्तुति के उपरांत - दोनों कार्यक्रम आंगनबाड़ी केंद्र पर क्यों किये जाते हैं जैसे प्रश्नों और विषय से जुड़ी हुई अन्य बातों पर चर्चा की गई एवं विडियो दिखलाया गया। इसके बाद सभी सेविकाओं के बीच **हमार अँगना** पत्रिका का विमोचन किया गया।

इसी तरह दूसरे दिन, प्रार्थना के बाद सभी सेविकाओं के साथ बालगीत का वाचन करवाया गया। बालगीत के उपरांत अब तक की गई

गतिविधिओं का पूर्वाभ्यास करवाया गया। जिसमें "**अ से अनार के लाल है दाने**", "**अदम-बदम**" और "**हुआ लिफ्ट में पावर कट**" करवाया गया। इसके बाद वंदना वर्मा द्वारा मोटू-पतलू और समोसे एवं गणित माला से गणित गतिविधि को करवाया गया ताकि सेविकायें अपने बच्चों को आसानी से गिनती और सरल जोड़ घटाव सिखा सके। आसान जोड़ को बताने के लिए सलाई मिठाई गतिविधि भी करवाई गयी। गणित गतिविधि के बाद सेविकाओं के साथ करिकुलम पर बातचीत करते हुए कविता कार्ड बनवाया गया। वंदना वर्मा द्वारा **लालू-पीलू** कहानी का पपेट के माध्यम से कथा-वाचन किया गया। अंत में सभी सेविकाओं को दोनों प्रशिक्षकों द्वारा अपने-अपने केंद्र को और ज्यादा आकर्षक एवं लाभप्रद बनाने हेतु tlm उपहार के रूप में दिया गया।

प्रभाव –

- नयी नयी कविता-कहानी से सेविकाओं को अवगत एवं अभ्यास कराया गया।
- गणित माला एवं सिलाई मिठाई के सहयोग से गणित गतिविधि के सरल रूप दिए गए।
- केंद्र पर करिकुलम आधारित पठन-पठान व्यवस्था की शुरुआत
- सेविकाओं ने कविता कार्ड बनाने का हुनर सीखा।
- केंद्र रंग-बिरंगे डिस्प्ले से सुसज्जित दिखा।

उपस्थित सेविकायें

दिन	पंचायत	सेविकाओं की संख्या
11 फरवरी 22	10	85
12 फरवरी 22	10	85

आपबीती – मस्ती भरे रंगों की कक्षा

मुझे बच्चों के साथ खेलना- कूदना उनसे उनकी ही भाषा में बातें करना बहुत पसंद है। मैं परिवर्तन में बच्चों के साथ मिलकर उनके रचनात्मक कौशल को बढ़ाने का प्रयास करता हूँ। मैं 8 से 15 साल के बच्चों के साथ समुदाय, परिवर्तन या विद्यालय में उनके लिए रचनात्मकता की कक्षा सुनिश्चित करता हूँ पर उनसे भी छोटे बच्चों के साथ काम करने का अनुभव ही अलग है। यह अवसर मुझे परिवर्तन बालघर आँगन द्वारा आयोजित साप्ताहिक आंगनबाड़ी केंद्र के बच्चों के साथ क्लास करने के दौरान मिलता है। बच्चों की यह अवस्था उम्र का एक ऐसा पड़ाव है जिसमें बच्चों में ज्ञान ग्रहण करने की सबसे ज्यादा क्षमता होती है।

मुझे याद है इन बच्चों के साथ बिताये एक क्लास की घटना। मुझे इन बच्चों के साथ मिलकर कुछ रंगों के साथ गतिविधि करनी थी। क्लास कराने से पहले मैं सोच रहा था कि इतने छोटे-छोटे बच्चों के साथ क्या-क्या कराया जा सकता है ? बच्चे बहुत छोटे हैं। मैं सोच में था कि किस तरह की गतिविधि करायी जाए जिससे बच्चे रंग भी पहचान लें और उनका मन खेल में भी लगा रहे। फिर मेरे मन में बच्चों के साथ मिलकर कूड़ेदान बनाने का ख्याल आया। कूड़ेदान के लिए सेविका द्वारा तुरंत मुझे पुराना कूट उपलब्ध करा दिया गया और मेरे पास तो रंग थे ही। इस तरह कूड़ेदान बनाने का सफ़र चालू हुआ। गतिविधि की शुरुआत करने से पहले मैंने बच्चों से प्रश्न किया–बताओ, हमलोग बाजार से क्या-क्या खरीद कर खाते हैं? सभी बच्चे एक साथ मिलकर मुझे बाजार में मिलने वाली खाने की सामग्री का नाम गिनाने लगे। कोई चिप्स बोलता तो कोई कुरकुरा, किसी ने मूंग दाल की बात कही तो किसी ने पाचक की। इस तरह बाजार से मिलने वाले बहुत से सामानों का लिस्ट मेरे पास तैयार हो गया। फिर मैंने बच्चों से पूछा- अच्छा बताओ कि इन सब सामान को खाकर इसका पैकेट कहाँ फेकते हो? तभी किसी बच्चे ने मेरी बात काटते हुए कहा कि "सर पर हमलोग तो बाल्टी में पैकेट फेंकते हैं।" मुझे लगा उसके घर में बाल्टी में कचरा फेंका जाता होगा इसलिए वह बोल रहा है। पर उसके साथ ही साथ सभी बच्चे बाल्टी-बाल्टी करके शोर मचाने लगे। तभी सेविका दीदी बोलीं -"सर हमलोग केंद्र पर एक बाल्टी रखते हैं जिसमें पूरा दिन का कचरा जमा किया जाता है।" उस बच्चे का आत्मविश्वास, उसकी चुस्ती और सजगता देख मैं बहुत प्रसन्न हुआ। फिर सभी बच्चों के साथ मिलकर हमलोगों ने एक पुराने कूट पर सफ़ेद पेपर चिपकाए। अब बच्चों की होली होनी थी। मुझे इस कूड़ेदान पर सभी बच्चों के हाथ के छाप से उसे सजाना था। सभी बच्चों ने अपने-अपने हाथ में रंग लगाया। मैंने सभी के हाथ में सिर्फ प्राथमिक रंग लगाया था जिससे सभी बच्चों के हाथ रंग-बिरंगे दिखने लगे। पहले मैंने सभी बच्चों से उस कूड़ेदान में एक छाप प्राथमिक रंग का दिलवाया और बच्चों से पूछा कि "ये रंग कौन कौन सा है?" बच्चे अपनी भाषा में -बुलुक्का, पियर और लाल रंग बताने लगे। फिर मैंने बच्चों के साथ एक खेल खेला जिसमें उन्हें अपने किसी सहपाठी से दोस्ती करनी थी और उससे हाथ मिलाना था। इस क्रम में जिन बच्चों के हाथ लाल रंग से रंगे थे और वह पीले रंग वाले दोस्त से दोस्ती कर रहा था तो लाल-पीला मिलकर नारंगी रंग बन गया। जिन बच्चों का हाथ पीले रंग में रंगे थे और वह नीले रंग वाले दोस्त से दोस्ती में हाथ मिला रहा था तो उसका हाथ हरा हो जा रहा थाऔर इसी तरह जिन बच्चों का हाथ नीला था और वह लाल रंग वाले से दोस्ती कर हाथ मिला रहे थे तो उनका हाथ बैंगनी हो जा रहा था। इस तरह बच्चे प्राथमिक रंग – लाल, पियर और बुलुक्का से नारंगी, हरियर एवं बैंगनी जैसे द्वितीय रंग को बनाने के आश्चर्य से रुबरु हो रहे थे। इस प्रयोग से बच्चे बहुत प्रभावित हुए और फिर प्राप्त नये द्वितीय रंग से अधूरे कूड़ेदान को सजाया गया। उन बच्चों के रंग-बिरंगे हाथ धूप में मानो एक इन्द्रधनुष की छाप पैदा कर रहे थे। मस्ती तो तब और दोगुनी हो गयी जब बच्चों को लेकर रंग छुड़ाने मैं चापाकल के पास गया। सभी बच्चे आपस में एक दूसरे के साथ हाथ में लगे रंगों से होली खेलने लगे। ऐसा करने से मना करने पर सारे बच्चे मुझपर ही टूट पड़े और मेरे गाल और कपड़ों को होली के रंग के सामान रंग डाले। अचानक बच्चों के झुण्ड के प्रहार से मैं हड़बड़ा गया क्योंकि इसके लिए मैं तैयार नहीं था या मैं सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा कुछ हो भी सकता है। पर जब मैंने सर उठाकर बच्चों की तरफ देखा तो मन संतोष से भर गया। होली के मौसम के बिना ही मेरे साथ होली खेल बच्चे बहुत खुश थे। मेरा चेहरा देख वे जोर-जोर से हँस रहे थे। इस तरह मस्ती के साथ-साथ बच्चों ने कूड़ेदान बनाया जिसका उपयोग आंगनबाड़ी केंद्र में किया जा रहा है। आज बच्चे बड़े गर्व से कह सकते हैं-" यह कूड़ेदान हमलोगों ने मिलकर बनाया है।"

राजवर्द्धन
घरौंदा कला प्रशिक्षक
परिवर्तन

बच्चों कि बातें

नाम – जान्हवी कुमारी
घर – बंथूसलोना
उम्र – 5 वर्ष

जान्हवी बंथूसलोना की रहने वाली एक चंचल और समझदार बच्ची है । जान्हवी का परिवार बहुत बड़ा है-वे चार भाई और चार बहनें हैं । जान्हवी अपनी बहनों में दूसरे नंबर वाली है । कोरोना महामारी के कारण पूरे दो साल तक आंगनबाड़ी केंद्र बंद रहा । जब 15 नवंबर को आंगनबाड़ी केंद्र खुला तो पहले की तरह मेरा आंगनबाड़ी विजिट नियमित हो गया और मैं प्रत्येक दिन आंगनबाड़ी सेंटर पर जाने लगी । एक दिन गोदभराई के लिए सेविका मीरा ने मेरे पास फोन किया और बोली – "आज आप मेरे केंद्र पर आइए ।" उस दिन मुझे बंथू श्रीराम जाना था । मै बंथू श्रीराम केंद्र के बाद में मीरा के केंद्र पर गई । वहाँ पर बहुत सारे बच्चे थे पर कोई बच्चा कुछ बोल ही नहीं रहा था । सब चुप थे । लग रहा था वहाँ सब मिट्टी का मूरत बैठे हैं । इस तरह बच्चों को देखकर मुझे लग रहा था कि केंद्र पर ज्यादा काम करने की जरूरत है । कुछ देर मैंने सेविका से बात की फिर क्लास शुरू की । क्लास के समय भी कोई बच्चा नहीं बोल रहा था । बस एक बच्चे की आवाज आ रही थी । वह आवाज जान्हवी की थी । क्लास खत्म हुई और मैंने उसको अपने पास बुलाया। जान्हवी देखने में एक दम नटखट लगती है पर उसके पास बहुत दिमाग है । वह किसी से नहीं डरती है । मैंने जान्हवी से बोला - "एक बालगीत सुनाओ ना । " पहले तो वह शरमा रही थी लेकिन जब उसने बाल गीत सुनाना शुरू किया तो एक के बाद एक सुनाती रही । जान्हवी को इस तरह से बाल गीत सुनाते देखकर मै हैरानी से भर गई- इतनी छोटी बच्ची को मेरे ही बालघर की इतनी सारी कविता और बाल गीत कैसे याद हुआ है? अभी तो दो साल केंद्र भी बंद था पर इसको कहाँ से इतना याद है?

मैंने सेविका से बात की तो वह बताने लगी-"जिस समय जान्हवी तीन साल की थी तब वह अपनी बहन के साथ नियमित आंगनबाड़ी सेंटर पर आया करती थी यह सबकुछ उसने उसी समय में सीखा है । जान्हवी की इतनी सुंदर प्रस्तुति से मेरा मन गदगद हो गया । जान्हवी ने बताया कि वहअपने पापा से बहुत प्यार करती है और रोज अपने पापा को बालगीत सुनाती है ।

जान्हवी अब अपने आंगनबाड़ी सेंटर के सारे बच्चों को प्रार्थना, व्यायाम, बालगीत और कविता सिखाती है । वह अपने आंगनबाड़ी केंद्र के लिए एक (आदर्श) रोल मॉडल है ।

नाम - रिया कुमारी
घर – नारायणपुर
उम्र – 4 साल

रिया अपने माँ-बाप की एकलौती बेटी है । जब शाम के समय बच्चों को परिवर्तन लाने के लिए नारायणपुर गाँव में ग्रुप बने तब से शाम के समय बच्चे परिवर्तन आने लगे । रिया बहुत ही प्यारी और नटखट लड़की है । रिया और अंशिका सप्ताह में तीन दिन बालघर में क्लास के लिए आती थीं । जिस दिन नारायणपुर के बच्चों को आना रहता है, बच्चे दो ही बजे से परिवर्तन की गाड़ी का इंतज़ार करने लगते हैं । बच्चे आने के बाद अपनी मर्जी से खेलते-कूदते या अपनी मनमानी करते हैं । रिया आने के बाद कुछ देर तक बालघर में शांत रहती फिर अपनी पूरी दिनचर्या सुनाती- मेरे साथ ये-ये हुआ है । जब वह अपनी बातें सुनाने लगती तो मैं उसके पास बैठ कर उसकी बातें सुनती । उम्र के हिसाब से रिया बहुत ही तेज है और जो भी बात बोलती है,वो एकदम बड़े बच्चो के जैसे बोलती है । रिया की ऐसी बातों ने सभी का दिल जीत लिया है । यही नहीं, समर कैंप के दौरान भी उसने पटना से आई हुई शिक्षिका का भी दिल जीत लिया । उसको जो भी सिखाया जाता था वो एक बार में ही कर लेती थी और बच्चों को सिखाती भी थी । यही नहीं उसने अपनी प्रस्तुति को भी बहुत ही बेहतर तरीके से अभिभावकों के सामने पेश किया ।

नाम – कातिका कुमारी
घर – नरेन्द्रपुर
उम्र – चार साल

गतिविधि शिविर के दौरान कातिका नरेन्द्रपुर उमरावती सिंह के सेंटर से प्रतिदिन परिवर्तन आती थी । कद में तो बहुत छोटी है, पर तेज बहुत है । एक सप्ताह के शिविर में वह एक दिन भी अनुपस्थित नही रही । उसमें कुछ कर दिखाने का ज़ज्बा अभी से दिखाई देता है । आने के साथ ही वह बोलती "मैडम जी हमको विशाखा परिवर्तन में नहीं ला रही थी, बोल रही थी तुम आंगनबाड़ी पर ही रहो, तुमको परिवर्तन जाने की जरुरत नहीं है । तुम अभी बहुत छोटी हो" उसकी

यह बातें सुनकर मैं विशाखा को समझाती कि तुम भी आओ और कातिका को भी लाओ, क्या दिक्कत है? गतिविधि शिविर के दूसरे दिन उसे अप-डाउन, अप-डाउन गिनती को करते हुए देखकर मै दंग रह गयी । जब वह वापस अपने सेंटर पर जाती है तो यहाँ की सारी गतिविधियां अन्य बच्चों के साथ करती है । यही सब बातें उमरावती सिंह मुझसे साझा करती हैं कि परिवर्तन से वापस आने के बाद कोई बच्चा कुछ नही बोलता है,बस एक कातिक ही वहाँ, की गयी गतिविधियों को बताती और दर्शाती है ।

सेविका की बातें

नाम – निभा सिंह
आंगनबाड़ी केंद्र – गौरी
पंचायत- मदेशिलापुर
प्रखंड – आंदर

निभा सिंह पहली बार परिवर्तन में सेविका प्रशिक्षण 2022 में आईं, तो लग नहीं रहा था कि वह पहली बार परिवर्तन आई हैं । निभा जी दोनों दिन प्रशिक्षण में उपस्थित रहीं । सबसे पहले आती थीं और सबसे बाद में जाती थीं । वह आते ही अपना स्थान ग्रहण कर लेती थीं । जब प्रशिक्षण में कोई सवाल पूछा जाता था तो वह उठकर सबसे पहले प्रश्नों का उतर देती थीं । उनमें सबसे अच्छी बात यह थी कि वे किसी से बोलने में थोड़ा भी संकोच नहीं करतीं थीं । जब रंगमण्डली द्वारा गाना हो रहा था, उस समय निभा जी के चेहरे से मुस्कान कम ही नहीं हो रही थी लग रहा था कि वे अब रंगमंच के साथियों के साथ भी जुड़ ही जाएंगी। उन लोगों को मिठाई खाने के लिए उन्होंने 200 रूपये भी दिए । उनका कहना था – "अगली बार आप सभी साथी मेरे सेंटर पर गोदभराई की रस्म कीजिएगा और मैं उसके बदले में आप सभी साथियों को उस माह के पोषहार का सारा पैसा दूंगी ।" यहाँ के कार्यक्रम से वे बहुत प्रसन्न थीं । बार–बार यही बोल रही थीं- "आप भी कभी मेरे सेंटर पर आइए और मेरे लिए और मेरे बच्चों के लिए कोई कार्यक्रम कीजिए ।" अगली बार गोदभराई के लिए निभा जी के सेंटर को ही चुना गया, और अगले महीने 8 मार्च 2022 को उनके ही सेंटर पर बहुत धूम–धाम से रस्म निभाई गई । इस तरह उस क्षेत्र की महिलओं को भी इस कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी मिली । सरकार द्वारा गर्भवती महिलाओं के लिए ऐसी ऐसी योजना चलाई जा रही है, यह बात सभी ने जानी ।

नाम – पूनम देवी सेविका
घर – रुइयाँ
पंचायत – जमापुर
प्रखंड - जीरादेई

परिवर्तन द्वारा आयोजित सेविका प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए सबसे ज्यादा बेचैन पूनम ही रहती हैं । प्रशिक्षण का नाम सुनते ही सबसे पहले उनका ही फ़ोन मेर पास आता है और वह हमेशा यही पूछती हैं-"इसबार प्रशिक्षण में डी.पी.एस से कौन-कौन मैडम आने वाली हैं?" रीमा मैडम के आने की खबर सुनकर वह बहुत खुश होती हैं और पंचायत में सबको सूचना देती हैं कि "इस बार रीमा मैडम ही आने वाली है फिर तो बहुत मज़ा आएगा । रीमा मैडम जैसी शिक्षिका के साथ एक सप्ताह काम करें तो हम बहुत सारी कवितायें ओर कहानियाँ आसानी से सीख सकते हैं क्योंकि उनके सिखाने की शैली बहुत ही शानदार है । अगर रोज परिवर्तन आना पड़े तो मुश्किल नहीं है क्योंकि हर दिन कुछ न कुछ नया ही सीखते हैं । हमलोग जैसी औरतों को भी वे एक अच्छे दोस्त की तरह समझाती हैं । उनका ऐसा व्यवहार हमारे दिल को छू लेता है ।" पूनम देवी यहाँ कराई गयी सारी गतिविधियों को ध्यानपूर्वक सुनती, समझती हैं और उन्हें अपने केंद्र पर नियमित रूप से अपने बच्चो के बीच कराती हैं । विजिट के दौरान उनके केंद्र के बच्चों की जुबान पर परिवर्तन में सिखाई गयी कवितायें और कहानियाँ रहती हैं । वह हमेशा अपने काम के प्रति बहुत ही जागरूक रहती हैं ।